मार्गदर्शि शेषय्यङ्गार्

कीर्तनानि

Compiled and typeset

using LaTeX 2ε , pdfLaTeX, and 'velthuis' dvng Type I fonts

©February 2009

कीर्तनानुक्रमणिका

१	आञ्जनेय परिपालय मां	४
२	कमलनयन यदुवर	६
३	कलये तावकीनचरण	८
४	कलयामि दशरथकुमारम्	१०
५	कोसलेन्द्र मामव	१२
६	गोपाल पाहि दिव्यरूप	१४
७	जय जय श्रीरङ्गेश	१६
८	जानकिमनोहराय	१८
९	देवदेवानुपमप्रभाव	२०
१०	नाथवानस्मि	२२
११	पाहि गोपवेष हरे	२४
१२	पाहि मां श्रीरघुनायक	२६
१३	पाहि मां श्रीरामचन्द्र	२८
१४	पाहि श्रीरघुवर	३१
१५	पाहि श्रीरमारमण	३३
१६	भजेऽहं वीरराघवम्	३५
१७	मामव रघिवीर	३७
१८	रङ्गनायक भुजण्गशयन	३९
१९	रङ्गपते पाहि माम्	४१
२०	राम पालय माम्	४३
२१	रे मानस चिन्तय	४५
२२	वन्दे गोविन्दराजम्	४७

२३ वन्दे वकुळाभरणम् ४९
२४ वन्देहं करिशैलनिवासम् ५१
२५ श्रीनायक मामव ५३
२६ श्रीरघुकुलवर शुभकर ५५
२७ श्रीरघुवर सुगुणालय ५७
२८ श्रीरङ्गशायिनम् ६०
२९ श्रीरङ्गशायि ६२
३० सारसदळनयन ६४
३१ सीते वसुमतिसंजाते ६६

१ आञ्जनेय परिपालय मां

रागं: मोहनम्

पल्लवि

आञ्जनेय परिपालय मां
अगश्वरवीरधुरीण
सञ्जनितसुरभयतोषित
सन्मुनिजनगीर्वाण

चरणानि

चामीकारधरणीधर भा-
समानशुभकरगात्र
तामरसहितादित्य*कला-
स्तोमसमीरणपुत्र ॥ १॥

श्रीरघुकुलतिलकचरण
सरसिजमदयुतलोलम्ब
चारणसुरनरकिन्नरके-
सरिनुतगुणनिकुरुम्ब ॥ २॥

*हितदित

लूनाशोकवनालोक(ह)-
लुण्ठितराक्षसवीर
जानकीमनोदुःखविनाशक
दळिताक्षकुमार ॥ ३॥

दमितपञ्चसेनाग्रह शर-
दहनल्लोषितलङ्का
लिमित[†]सप्तमन्त्रीसुतान्तक
विविधसमरनिश्शङ्क ॥ ४॥

अनिशं श्रितरामायण का-
ञ्चनरम्भावनवास
जनकांक्षितफलदायक को-
सल पुरीनायकदास ॥ ५॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

[†]शपित

२ कमलनयन यदुवर

रागं: पूर्विकल्याणि

पल्लवि

कमलनयन यदुवर मां पालय
कपटगोपडिम्भ
कमनीय गुणगंभीर
वधूसंघटितपरिरम्भ

चरणानि

चरणनिहतशकटासुर निरुपम-
शौर्यसमारम्भ
करिकरनिभदोस्तम्भ
धृतकालीयसौरम्भ
पुरहरझृम्भावृषसाम्ब
विरोषमदण्डम्भ - हंकृति
विरहितमुनिवरसेव्य (मकरिका)
विरचितराधाकुचकुम्भ ॥१॥

अतुलितलावण्यनिदान
मनोहरमाल्यसुगन्ध

अङ्गुतकरनिजसान्द्र
परीमूतजरासन्ध
बुधयुतसन्धायकमन्दा-
यितमन्दरगन्धानेक
पतिसन्मुदितामरगणविध्वंसित
शरणगतभवबन्ध ॥ २॥

दमितकलुष कोसल पुरवरनगदा
शरणयशोत्कण्ठ
कंसदमन वैकुण्ठ
दनुजाहिनीलकण्ठ
धरसमकण्ठाश्रितकण्ठ
अब्जजवन्दितकुण्ठापगत
दमनजसेवकनिर्मग्रहीत
घनयमुनासरिन्नृपकण्ठ ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

३ कलये तावकीनचरण

रागं: सावेरि

पल्लवि

कलये तावकीनचरणकिसलये
पाहि श्रीरङ्गनिलये
लोचनपरिहसितकुवलये
त्वदेकशरणोहम्

चरणानि

सदये प्रचुरितसुरपतिविलसदये
परिपलितभुवनसमुदये
सद्वाहितमुनिजनहृदये
त्वदेकशरणोहम् ॥ १॥

वरदे निजगमनजितमदद्विरदे
वरचिकुरविलम्बितसरदे
कुन्दकमले करयुगलविरजितकमले
त्वदेकशरणोहम् ॥ २॥

सुरदन्तिसमर्पितकमले
निस्तुलदुपाधिपरिमळे

मुकुलसंकाशरदे
त्वदेकशरणोहम् ॥ ३ ॥

ललिते दिव्याभरणसमुज्वलिते
कोसल नगरवरकलिते
सुरवनिताजनसंवलिते
त्वदेकशरणोहम् ॥ ४ ॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

४ कलयामि दशरथकुमारम्

रागं: सुरट्टि तालं: जम्प

पल्लवि

कलयामि दशरथकुमारं सजल-
जलदरूपमतिशयशुभकरम्

चरणानि

रमणीयगुणालवालं सुम-
ध्यमभागलसमानतपनीयचेलम्
समरनिर्जितवैरिजालं सतत-
कमलासनाश्चर्यकरभव्यलीलम् ॥ १॥

जनकराजसुताकळत्रं श्वेत-
वनरुहपलाशसंवादिवरनेत्रम्
घनकलुषवल्लीलविचित्रं सकल-
मुनिजनामरनिकरविनुतचरित्रम् ॥ २॥

परमबोधानन्दरूपं दिव्य-
करयुगळविधृतभासुरबाणचापम्

वर कोसल पुरीमहीपं नित्य-
परिजनीकृतवीरवरकलापम् ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

५ कोसलेन्द्र मामव

रागं: मध्यमावति

पल्लवि

कोसलेन्द्र मामवामित-
गुणनिवासभगवन्
भासमानमहामणिमण्टप-
परिविलसितसिंहासनविराजित
नी स रि स रि मा रि म पा नि प मा-
पा स स नि स नि म प नि प्पा म्म रि म रि स
नीरजसरमासमपावनमा-
परिलसित कृपानिप्पाम्मधुरस

चरणानि

बाहुधृतशरचाप धृत-
भक्तजनाखिलताप
अगवाहन विमलरूप
हार्मकुटकेयूरकलाप ॥१॥

जानकीलसितङ्ग जल-
जास्यविलसितलङ्क

भानुवंशपयोधिशशाङ्क
पादविहितमुनितरुणीपङ्क ॥ २॥

नीलजलधरगात्र नुत-
नीलनलारुणपुत्र
फाललोचनमुखनुतिपात्र
पवनसुताकलित चारुनेत्र ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

६ गोपाल पाहि दिव्यरूप

रागं: धन्याशि ताळं: आदि

पल्लवि

गोपाल पहि दिव्यरूप
यदुकुलदीप
गोपिकाविरहतापशमन सल्लाप
दीपितकलापलाप

चरणानि

गोरागजलदसमीर सर्वंसहभार-
हरणकृतावतार
सर्व भुवनाधार[‡] घोषायोषाजार
नवनीतचोर
हारमकुटकेयूरकटकमञ्जीर-
शोभितसुकुमारशरीर ॥१॥

बृन्दारकहितबृन्द विदारकबृन्दा-
वननिवासानद-
गोपसदानन्ददायक गोविन्द
नतमुचुकुन्द

[‡]जनाधार

नन्दकायुध पुरन्दरनन्दन-
वन्दितपदारविन्द मुकुन्द ॥ २॥

नानाचराचरविधान मोहकवेणुगान
परिपालितोग्रसेन
द्रुपदसुतामानरक्षक भक्तदीन
कोसल नगरीश
दानवान्तकविलून जरासुतसेन
कंसहर दीननिदान ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

७ जय जय श्रीरङ्गेश

रागं: भैरवि

पल्लवि

जय जय श्रिरङ्गेश नाथ
जनरक्षणगणिताश
नलिनवैरिसहस्रसंकाश
रचितात्रयीशास्त्रनिदेश कञ्जनयन
खगादीशहयनगरीगिरिनि-
लय नलिनासनाश्रयनागशयन

चरणानि

रङ्गनायकीसहाय
आराधकत्रिदशनिकाय
सङ्गराङ्गणाहतदैतेय
नारदादिसज्जन[§]गेय सारङ्ग
सारङ्गार्तिहर करसंघातसंग
रथाङ्ग चरणजातगङ्गानिशाङ्क ॥ १॥

लङ्कानिहितकटाक्ष
स्थितिलयसर्गकलनदक्ष

[§]सङ्गति

विसकाल[¶]स्थितकालशिक्ष
सह्यजान्तरस्थितकृतदीक्ष
अकलङ्कचरित्र दिति[‖]किङ्करनिकर
रङ्कससीताकलङ्कशशाङ्क ॥ २॥

सारदयानिधिकान्त
कोसल राजधानीनिशान्त
निर्झरारिसंघातकृतान्त
चारणाकान्तधरानन्त संसार
संसाराघनतराग्निधरधरणि
हारकिरणसरसीरुहाधार ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

[¶]निसंकाश
[‖]दित

८ जानकिमनोहराय

रागं: धन्याशि

पल्लवि

जानकीमनोहराय जयमङ्गळम्
पवनसूनुनीतधराय शुभमङ्गळम् - श्री
जानकीमनोहराय जयमङ्गळम्

चरणानि

मकरकुण्डलयुगळमण्दितगण्डस्थलाय
चकितमुनिशरण्याय जयमङ्गळम्
अकलङ्कशेषाङ्कसन्निभसूनाय जलदनील-
सुकुमारशरीराय शुभमङ्गळम् ॥ १॥

गर्वितरावणकुम्भकर्णविद्रावणाय
सर्वलोकशरण्याय जयमङ्गळम्
गीर्वाणवन्दितांघ्रियुगाय सुज्ञानाय
सुरविद्यास्वरूपाय शुभमङ्गळम् ॥ २॥

जलदमूल्यमणिसिंहासनस्थलाय
कोसल नगरनिलयाय जयमङ्गळम्

जलदळलोचनाय शबरीवरदाय भक्त-
सुलभाय श्रीरामाय शुभमङ्गळम् ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

९ देवदेवानुपमप्रभाव

रागं: भैरवि

पल्लवि

देवदेवानुपमप्रभाव
भावातीतनुतिद
देवदेवकीपुण्यनिधे कृष्ण मानवरूप
पावनगुणाम्बुधे

चरणानि

नीलानीलभक्तकल्प
सालासालकनिटिल श्री
लोलालोलवनमालिका रासक्रीड
ताळाताळवनविपालक ॥ १॥

सारासारसाक्षनिर्वि-
कराकारकंसहर
शुराशूरकुलाग्रगण्य यशोदाकु-
मारामारकोटिलावण्य ॥ २॥

भीमाभीमसमरवरकवि-
रामारामानुज सत्य

भामाभामजगत्कारण यादवसर्व-
भौमाभौमघनसमीरण ॥ ३॥

धीराधीरायितकेशवि-
दारादारायित वल्लवी-
पारावारसंरक्षणसंसारकू-
पारापारगमकवीक्षण ॥ ४॥

गोपागोपायिताश्रितक-
लापालापा इष्टानन्द
गोपागोपाल आराधन कोसल पुर
भूपाभूपोद्भवसूधन ॥ ५॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१० नाथवानस्मि

रागं: तोडि

पल्लवि

नाथवानस्मि विप्रनारायणे रङ्ग-
नाथकैङ्कर्यरचनपरायणे

चरणानि

दिनदिनप्रवर्धित तुलसीवन-
घनसुमतरळ श्रीकामितानेन
वनमालिकाशाप्रभावेना-
तीत निगमेन शान्तिविधानेन ॥ १॥

शरणागतरक्षक रङ्गेश्वर-
विरचितविस्मयकरधातेन
हरिभक्तचोळनरवरवन्दितपद-
सरसीजनबुधसंस्तुतेन ॥ २॥

अतुलितश्रीमालिकातिद्राविड-
श्रुतिरचनेन तारितलोकेन

अतिविचित्रमाल्यसमर्पण
हर्षित कोसल नगरीनायकेन ॥ ३ ॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

११ पाहि गोपवेष हरे

रागं कल्याणि

पल्लवि

पाहि गोपवेष हरे माम्
पाहि गोप वेष
विदळितभक्तसर्वदोष
कौस्तुभमुख्य मञ्जुभूष हरे माम्

चरणानि

भव्यगुणकपाल शार्ङ्ग-
चाप बौद्धरूप चतुर्मुख-
सेव्य योगिवरभव्य पद्ममुख
दिव्यलक्षणाञ्चितपदयुगल ॥ १॥

चन्द्रकुलावतंस
दमित कंस परमहंस
चिदावनमदेन्द्र मुख्य
विहगेन्द्रवाहन
उपेन्द्र काळीयोरगमदहरण ॥ २॥

नन्दकप्रहरण भूरि-
करुणालवाल शरणागतपावन
नन्दनन्दन सनन्दनादिमुनि-
वन्दनीय सकलजनशरण्य ॥ ३॥

कञ्जदळनिभाक्ष
सुजनरक्ष दनुजशिक्षप्रवीण
धनञ्जयार्तिहर मञ्जुभाषण
निरञ्जनागणितनिरुपमलील ॥ ४॥

दन्तिराजवरद
रात्रीशरद वाग्विशारद
व्रजश्रीकान्तयोगिवरचिन्तनीय
वेदान्तवेद्य कोसल पुरनिलय ॥ ५॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१२ पाहि मां श्रीरघुनायक

रागं: बेगड चापु ताळं

पल्लवि

पाहि मां श्रीरघुनायक भद्रदायक
भासुरकोदण्डनायक
वाहिनीशमदविदारक निरयतारक
पालितसूर्यकुमारक कालसंहारक

चरणानि

मुनिजनक्लेशभञ्जन लोकरञ्जन
दनुजमेघप्रभञ्जन
दिनकरकुलभूषण दीनपोषण
विनिहतखरदूषण मञ्जुभाषण ॥ १॥

द्युतिजितयूथविरोचन जलजलोचन
श्रितजनाघविमोचन
कृतकाकासुरदण्डन रुचिरमण्डन
खेचरसन्नुतभण्डन वैरिखण्डन ॥ २॥

धरणितनयारमण वालिदमन
दानवेतण्डगमन

गुरुलावण्यजितमदन कुन्दरदन
कोसल नगरसदन चन्द्रवदन ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१३ पाहि मां श्रीरामचन्द्र

रागं: पुन्नागवराळि

पल्लवि

पाहि मां श्रीरामचन्द्रनळिनासनं
भवविनुतदिव्यगुणसान्द्रम्
देहि तवपदकमलभक्तिमान पाहि
दीनवात्सल्यदयासिन्धो बन्धो

चरणानि

तरणिकुलसलिलनिधिसोम ताटका-
तनयादिराक्षसविराम सन्मुदित-
पुरुहूतमुखसुरस्तोम पदरेणु-
पूतगौतममौनिभाम जनकजा-
धरणीशकन्याभिराम कार्मुख-
हरणपरीभूतभृगुराम दरदळित-
नीलोत्पलश्याम रिपुभीम
शरदेवतासार्वभौम ॥ १॥

जनकोक्तिविधृतभूभरण जानकी-
सौमित्रिरञ्जितानुसरण ब्रह्मर्षि-

घनचित्रकूटगिरिशरण भर-
तनिर्गमहेतुपादवितरण विभुधर-
ञ्जनकरविराधसंहरण दण्डका-
वननिलय निखिलमुनिशरण
घनतपोधन सुतीक्ष्णाभरण रणकरुण-
घटज**दत्तधनुप्रहरणाभरण ॥ २॥

खरवंशहर संप्रहर शरनिहित-
कनकमृगदारुणाकार संसार
परिमोचितविहङ्गवीर प्रशसितघन††
बन्धुदनुजभुजापहर अद्भुताशा
वरवधूविविधोपहार आकलित
पम्पवनान्तरविहार तरणि
कुलसौख्यकारिस्समीरणकुमार
दळितवालिमहाशरीरशूरा ॥ ३॥

अनुपमप्लवगपरिहार हृदयसौख्यद
हनुमद्वचनसार अतिजवन
वनचरामृतवनदितीर पृथुत‡‡ रा-
वणसहोदरभयविदार सेतुब-
न्धनजनितरक्षोविचार लोकहित

**घटित
††प्रशमितग्र
‡‡प्रथित

दशवदनजीवापहार विनुत
कमलजामुख्यबृन्दारकसादर विहित
कोसल राज्यभाराधीरा ॥ ४ ॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१४ पाहि श्रीरघुवर

रागं: तोडि

पल्लवि

पाहि श्रीरघुवर नित्यं देहि
मामनन्यशरणं वन्देहि
महि तावकदयां देहि
तवपदयुगभक्तिं देहि
सुशरासनधर वैदेहि-
वदनकमलमधुकर पाहि

चरणानि

करुणाकृत शरणागत
भरणातिवितरण
अनुपरादिमुनिविरोध खरदूषण
विराधगुरुधराधरालिकुलिश ॥ १॥

शमितानमदमिता सुख-
दमितामरविनुत
विगतमानविमलमानस
विबुधगम्यमानघनसमानशुभविग्रह ॥ २॥

धनदानुजघनदाव
दहनदारुणवनदा
त्रिभुवनादिपतिगणादिहरवर
गुणसनाददिवसनादकुलपावन ॥ ३॥

दुरितापहचरिताधृत
भरतात्रिशुभरत
सुमधुरालहिमवराळफण को -
सल पुरालयदुचिलकामृतमुखा ॥ ४॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१५ पाहि श्रीरमारमण

रागं: अठाणा ताळं त्रिपुट

पल्लवि

पाहि श्रीरमारमण सन्ततं मां
पाहि श्रीरमारमण पावनसंक्रमण

चरणानि

मोहनरङ्गनायक भक्तजन-
व्यूहवाञ्छितदायक सकलजगन्-
मोहनायतबाहु घननिभ-
देह खगपतिवाह विदळित-
मोहदेहसमूहनुतिपात्र
कमलदळनेत्र ॥१॥

दानवमर्दन धर्मविवर्धन
मानितगुणाभरण मौनिजन-
मानसाश्रितचरण
करुणाभरण
दीनजनसन्ताननिकरनिदान-
विनुतेशान नारद-

गानलोल महानुभाव हरे
मधुकैटभारे ॥ २॥

तोषितामरलोक दूषिताखिलशोक
पूषवंशजपूजितसेवक वि-
भीषणवरदायक
प्रणवसौध
शेषशयन विशेषमृदुतरभाष
वरमणिभूष-
कृतनुतवेष शुभकरदोष नि-
र्दोषपोषिताशेष ॥ ३॥

वारणपरिपाल वनजसम्भवलोल
सूरितनयरक्षक
रावणादिक्रूरराक्षसशिक्षक
कोसल पुरीन्द्र
मारशतसुकुमार वररघुवीर
गुणमणिहार
सुजनविहार जलधिगंभीर
मृदुचरण मुनिशापहरण ॥ ४॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१६ भजेऽहं वीरराघवम्

रागं: गौळिपन्तु ताळं: आदि

पल्लवि

भजेऽहं वीरराघवं भजेऽहम्
सारधनुर्गुणातिविस्तारित-
भार्गवभूरिलाघवम्

चरणानि

पालितदिनकरगोत्र सदा परि-
पालितशालिहोत्रम्
वरलावण्यास्पदगात्रं
कल्याणमयदिव्यनेत्रम्
सुग्रीवजाम्बवदादि वरपरिसेवितं
समदावरणजैत्रम् ॥ १॥

वीक्षारण्यशयानं सदा-
वृळीदहरिनामानम्
संरक्षितमुनिसन्तानं
सारसतरकरुणामृतनिदानम्
शुभलक्षणलक्षितमक्षयघन-
शरशिक्षितामरविपक्षवितानम् ॥ २॥

गोपायितदेवेशं श्री
कोसल नगरनिवेशितम्*
इन्द्रोपमसङ्काशं
कृतदुर्मदकबन्धनाशम्
हृतापनाशसमीपगतं
जितकोपमतितभूषाभमहीपम् ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

*निवेशम्

१७ मामव रघिवीर

रागं: असावेरि ताळं त्रिपुट

पल्लवि

मामव रघुवीर मानितमुनिवर
भूमिसुतानायक भक्तजन-
कामितफलदायक

चरणानि

गर्वितसुत्रामतनयविराम
नृपतिललाम दशरथराम समरोद्धाम
दशमुखसामजमृगेन्द्र कोसल पुरीन्द्र ॥ १॥

दिनकरकुलदीप धृतदिव्यशरचाप
वनजसन्निभगात्र योगिवर्य
सनकादिनुतिपात्र नभोमणि ॥ २॥

तनुज शरणपवनज मुखपरि-
जनजगदहितदनुजमदहर
मनुजतनुधरवनजदळनयन अमितमुनिशमन ॥ ३॥

भण्डनोद्धतदोष पालितगौतमयोष
दण्डितमारीच अब्धिगर्व
खण्डकनाराच दिव्यरत्न ॥ ४ ॥

कुण्डलकलितगण्डयुगवे
तण्डकरभुज दण्डहिमकर
खण्डधरकोदण्डदळनयन अगणितगुणगण ॥ ५ ॥

घटितनानाभूष कलिताश्रितपोष
तटिधूपामितवासन श्री कोसल
पुटाभेदननिवासन - (इन्द्रनीलाभ) ॥ ६ ॥

कुटिलकचवृत निटलतटमणि
पटुलखचितलनिटलसटमृदु
चटुलपीतनतजटिलमूलघन दरहसितवदन ॥ ७ ॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१८ रङ्गनायक भुजण्गशयन

रागं: केदारगौळ ताळं: आदि

पल्लवि

रङ्गनायक भुजङ्गशयन सा-
रङ्गवरद संरक्ष माम्
नीरदोज्वलशरीर नीळा-
धर रमेश संरक्ष माम्

चरणानि

पुण्यचरित करुण्यसागर हि-
रण्यचेल संरक्ष मां
पङ्कजाप्तहरिणाङ्कनयन मक-
राङ्कजनक संरक्ष माम् ॥ १॥

भोजेन्द्रमणिवैजयन्ति वि-
राजमान संरक्ष मां
बाधितामरविरोधिबुधा-
राधनीय संरक्ष माम् ॥ २॥

सूरिवृन्दसरसीरुहासन
पुरारिवन्द्य संरक्ष मां

प्राणिपालनधुरीण केशव
पुराणपुरुष संरक्ष माम्
दीननिकरसन्तानभूरुहम-
हानुभाव संरक्ष माम् ॥ ३॥

आञ्जनेयकरकञ्जसंक्रम नि-
रञ्जिताद्रि संरक्ष मं
श्रीधरप्रणवसौध कोसल पु-
राधिनाथ संरक्ष माम्

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

१९ रङ्गपते पाहि माम्

रागं: दर्बार् रूपक ताळम्

पल्लवि

रङ्गपते पाहि माम्
मङ्गळकरसङ्गरविज-
याङ्कजनिभमोहनाङ्ग
गङ्गाजनकगरुडतुरङ्ग भव
भङ्गकरुणापाङ्ग धृतरथाङ्ग

चरणानि

बृन्दावनलोल आ-
नन्दकर सुशील
वन्दितमुनिजनपाल
नन्दकधर सुगुणजाल
मन्दरधर कुन्दरदन
सुन्दरवदनारविन्द
वन्दितमुनिचरणारविन्द कुरु-
विन्दधर गोविन्द सदानन्द ॥१॥

कुन्तीसुतामोद अ-
क्रूरविनुतपाद

चिन्तितकार्यप्रसाद
सततमुरळीविनोद
अन्तरहितदन्तिवरद
सन्तोषयशोविशाल
अन्तकभयहरण सुवृत्तान्त अति-
शान्तकरुणास्वान्त रमाकान्त ॥ २॥

पङ्केरुहनेत्र आ-
पन्नसुजनमित्र
पङ्कजभवनुतिपात्र
पङ्कजसदनाकळत्र
शङ्करसख किङ्करजन
सङ्कटहरदनुजचय भ-
यङ्कर गोपीजनशशाङ्क नि-
श्शङ्क निष्कळङ्क श्रीवत्साङ्क ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२० राम पालय माम्

रागं: भैरवि

पल्लवि

राम पालय मां हरे सीता-
राम पालय मां
राम रविकुलसोम जगदभिराम
नीरदश्याम दशरथ-
राम पालय माम्

चरणानि

सारदयादानविचक्षण सकल-
साधुजनावन निरीक्षण
सुरवर शुभकर लक्षण दश-
वदनबाहुगर्वशिक्षण हरे
दीनजनमन्दार दुरितविदार
वरकारुण्यालय श्रीरघु ॥१॥

भण्डनिर्जितखरदूषण परि-
पालित विनुतविभीषण आ-
खण्डलार्पितदिव्यभूषण दण्ड-
कावनमुनिभजन पोषण हरे

दण्डधरमखण्डनुतकोदण्ड-
धरदोर्दण्डविक्रम ॥ २॥

अनुपमनिजसत्यभूषण माया-
तनुजारि[†]मारीचभीषण घोर-
वननिधिघनमदशोषण श्री मो-
हनरङ्ग हरिभजनतोषण हरे
इनतनुपुरवरनित्यवैभव
जनित कोसल विनुतशरबल ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

[†]तनुधारि

२१ रे मानस चिन्तय

रागं: कल्याणि

पल्लवि

रे मानस चिन्तय मौनीन्द्रं
रामानुजमतिकरुणासान्द्रम्
धृतकाषायवसनत्रिदण्डं श्री-
पतिमतिसंस्थापनशौन्डम्

चरणानि

अधिगतयामुनामुनिसंप्रदायं
अमितदुरितहरनामधेयम्
गोष्टीपूर्णगुरुदयापात्रं
गुरुतरकलयावनिजगोत्रम् ॥ १॥

मानुषवेषापगतानन्तं
माधवपदयुगविहितशान्तम्
परवादिमहागजमृगराजं
सरसहृदयबुधजनराजम् ॥ २॥

द्वयमन्त्रवितरणैकधुरीणं
वाग्वादगतवेदशास्त्रपुराणम्

उपवीतशिखाविराजमानं
उल्लसितोर्ध्वत्रिपुण्ड्रविधानम् ॥ ३॥

विदितश्रीभाष्यादिविरचनं
वेदतुल्यमहिमोज्वलवचनम्
कोसल पुरवरभक्तावतंसं
कुटिलमतमहाव्रतहासहंसम् ॥ ४॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२२ वन्दे गोविन्दराजम्

रागं: शङ्कराभरणम्

पल्लवि

वने गोविन्दराजं
सदा वनजसुरवरराजम्
अविरतमिन्दिरासुमन्दिराय
घोरास्कन्धरार्धं नन्दनादिभाजम्

चरणानि

बाधितार्तजनशोकं
गुरुपापहारिपुण्यश्लोकम्
सन्ततध्येयसकललोकं
पद्माधरेशं मानिप्रवेकं
शुभदाराधिकाळिबोधकारदुरितं
नादकारनाधिकावलोकम् ॥ १॥

शान्तनथगुणबाद्यं
विश्वामिताशोषवेद्यम्
वेदान्तछायाप्रतिपाद्यं
ज्ञानानन्दाश्रयमाद्यम्

कनकसभान्तरनिरन्तरादर्शं
शान्तरागन्तरनिवेद्यम् ॥ २॥

भूरिशुभगुणजालं
जम्बुनाथमयदिव्यचेलम्
घनसरकीलकीटनिटिलं[‡]
कोसल नगरीवरपालम्
मौनिमनोरुजापहारजापदं
वन्दारुजपपारिजातसालम् ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

[‡]निटालं

२३ वन्दे वकुळाभरणम्

रागं: मुखारि

पल्लवि

वन्दे वकुळाभरणं
शतवैरिणं जितकारणम्
भजनानन्दितादिनादं दमशमगुणमन्दिरं
सुजनवन्दितचरणम्

चरणानि

पावनकीर्तिसमेतं सं-
पादितविशिष्टाद्वैतम्
सकलजनावबोधसञ्जीवनवर-
भाषावेदविरचितानूर्वीभूतम् ॥ १॥

स्वर्णाम्बरभक्तवार्यं
श्रीवैष्णवपरमाचार्यम्
तरुसत्कीर्णवरताम्रपर्णीतीरं
धीन्नगतं बुधवर्णिताचार्यम् ॥ २॥

वीतरागमुदमानं
पृथ्वीगतविष्वक्सेनम्

अतिविख्यातकुरुतिन्त्रिणीतरुमूलनि-
केतनम् शुभगुणजालनिधानम् ॥ ३॥

त्रासितकुमुदसमाजं
चिन्मुद्राञ्चितहस्ताम्बोजं अर्चित-
कोसल नगरनिवासममितजन-
दासजनं पद्मासनभाजम् ॥ ४॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२४ वन्देहं करिशैलनिवासम्

रागं: जुजावन्ति

पल्लवि

वन्देऽहं करिशैलनिवासं
वरदराजं अतसीसुमभासम्
पूर्णेन्दुबिंबसौन्दर्यविडम्बं नि-
पुणवचनं अरविन्दविकासम्

चरणानि

श्रीवेगवतीतुङ्गतुरङ्गं
श्रीकरबृन्दनीलजनिभाह्ळादम्
पावनकोटिसौधान्तं
पद्माकृतलीलासंवादम् ॥ १॥

सकलचेतनाचेतनपालनं सं-
श्रितानन्दसरसीतीरम्
आकुटिलभक्तपूर्णकाञ्चीपुरं
आकर्णनीय सव्याकरम् ॥ २॥

निरतिशयनिजाविर्भावं
नीरजसंभवं अजनीमोदम्

गरुडारोहमहोत्सवमतुलित-
गण्यमहिम कोसल पुरनाथम् ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२५ श्रीनायक मामव

रागं: पुन्नागवराळि

पल्लवि

श्रीनायक मामव नाथशरण्या
दीनावनलीला मन्मथमुरळीनादप्रिय
ज्ञानानन्दनिधान जितसर्वदानव

चरणानि

तोयजदळसन्निभायतनयन
गाङ्गेयनिश्चलभक्तिदायक
गाङ्गेयवासन करुणायतन विधात-
मायतालङ्कासहायक ॥ १॥

धूताखिलदोषजातहृद्दानव
नीताघासुरघातक
पुरुहूतात्मजराधासुतागमननिर्णेता
श्रितपरिजात(क) ॥ २॥

रासक्रीडनकृतोल्लाससमुक्तिकोल्लास
नासश्रीधरगरुडासन पाक-

शासन मणिनील कोसल नगरनि-
वास वैरिचण्ढशासन ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२६ श्रीरघुकुलवर शुभकर

रागं: सावेरि ताळं: आदि

पल्लवि

श्रीरघुकुलवर शुभकर
सीताराम मां पाहि

चरणानि

सारसदळनेत्र जगन्नुत जलधरनिभगात्र
भवसंसारकलुषभञ्जन सु-
चरित्र जनकजास्यपङ्केरुहमित्र ॥ १॥

नवरसालपल्लवमृदुपदयुगळ
नखरुचिजिततारक
भुवनमोहनविश्रुतशङ्खगळ ॥ २॥

शिवसन्नुतनाम सद्गुणशीलपूर्णकाम
नतकैरवसमूहरञ्जन
हिमधाम रणमहोग्रराक्षसकुलभीम ॥ ३॥

विमलकुन्दकुड्मलसुन्दररदन
रथगजादिभृतन
सङ्करराङ्गणजितदशवदन ॥ ४ ॥

कुमुदारिप्रताप मोहनगोपबालरूप
मदगजगमनसान्द्र
सत्करुणालाप कलितश्रीरामचन्द्रभूप
जितकपोल ॥ ५ ॥

श्रितजनमन्दार योगिजनचित्तसञ्चार
नतसुमहितविशेष
भूपालङ्कार इनसुतादिकपिसैन्यविहार ॥ ६ ॥

अतिविशाल कोसल नगरनिवास
मणिकुण्डलनीरा-
जितकपोलतलचम्पकसुमनास ॥ ७ ॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२७ श्रीरघुवर सुगुणालय

रागं: घण्टा

पल्लवि

श्रीरघुवर सुगुणालय
पुरहरचिन्तननामदेय
नीरदनीलशरीर पाहि
धरणीसुतासहाय

चरणानि

करुणावरुणालय परिवारित
हरवीरनिकाय
शरणागतभयहरण सुख
परिवारकाञ्चनेय ॥ १॥

नीरधिमदहरण विशारदशर
सूरिजनविधेय
घोराकारसुरारि विदारण
कारणसमुदय ॥ २॥

गुरुभवदवदहन घनाघनसार
सूरिजनभवमेय

निरवद्यतपोनिरति[§]जितेन्द्रिय
वरयोगिध्येय ॥ ३ ॥

भीषणदूषणहर मृदुभाषण
तोषितगाधेय
पोषितविभीषण वनपोषण
शेषनामधेय ॥ ४ ॥

गन्धमतङ्ग (ज) गमनमहा
भागवतभागधेय
सिन्धुरहस्तयुतबाहु
प्रचेतसमुनिगेय ॥ ५ ॥

अतिशुभलक्षण जगद्विलक्षण
अतिपरमोपाय
श्रितकमलेक्षण बुधरक्षण
खरशिक्षणधौरेय ॥ ६ ॥

भासुरबाणशरासनहस्तवि-
लासमनुजकाय

[§]विरति

कोसल पुरवासमन्दहाससु-
नासकौसलेय ॥ ७॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२८ श्रीरङ्गशायिनम्

रागं: धन्याशि ताळं: जम्प

पल्लवि

श्रीरङ्गशायिनं सकलशुभदायिनं
चिन्तयेऽहं सदा हृदये
कारुण्यसौशील्यशौर्यवात्सल्यादि
कल्याणगुणजलनिधिं देवदेवम्

चरणानि

क्षीरसागरसमुत्थितविमानान्तरं
श्रीभूसतीभासितम्
सूरिबृन्दसुनन्दनन्दजयविजयादि
भूरिपरिजनसेवितम्
चारणोरगसिद्धसाध्यगन्धर्वगण
सनकादिमुनिसन्नुतम्
सारसोद्भवमुखामरपालनप्राप्त-
सत्यलोकादि[¶]वसितं देवदेवम् ॥ १॥

परमभक्तेक्ष्वाकुमहितपुण्यविशेष
धरणीतलसमागतम्

[¶]लोकोद्भव

सरयुनदीतीरविरचितहिरण्मया-
वरणसुविमानस्थितम्
गुरुतपोनिधिवसिष्टादिसंयमि-
सुमन्दिरपरिवेष्टितम्
तरणिकुलधन्यमूर्धन्यादिसन्तत-
कृतोत्सवशोभितं - देवदेवम् ॥ २॥

निरुपमकवेरजासुकृतातिशयदनुजवर
विभीषणवशगतम्
चिरकालकृतवासमुनिसान्द्रचन्द्र-
पुष्करणीतटसुस्थितम्
वरधर्मवर्मनिर्मितभर्ममय-
सप्तवप्रान्तरविराजितम्
सुरसेव्यमान कोसल पुरीश्वरमखिल-
नरलोकपरिपूजितं देवदेवम् ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

२९ श्रीरङ्गशायि

रागं: केदारगौळ

पल्लवि

श्रीरङ्गशायि जयमङ्गळं
जयमङ्गलं नित्य शुभमङ्गळम्

चरणानि

मन्दस्मितमुखारविन्दाय प्रणव-
मन्दिराय जयमङ्गळं धृत-
कन्दर्पशतकोटिसुन्दराय
सुगुणाकराय शुभमङ्गळम् ॥ १॥

सामादिनिगमान्तसन्नुताय
सुगुणाकाराय शुभमङ्गळं
कामजनकाय कलुषभञ्जनाय
कामदाय शुभमङ्गळम् ॥ २॥

फालाक्षकलितप्रभावयौवन-
मालिकाय जयमङ्गळं

अक्षौहिणीभञ्जनाय कोसल नगराय

मावरय शुभमङ्गळम् ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

३० सारसदळनयन

रागं: सुरट्टि

पल्लवि

सारसदळनयन मामव
क्षीरजलधिशयन
मारजनक वन्दारुनिकर
ब्रह्मवृन्दारकेन्द्रनुत

चरणानि

अण्डजपतिकेतो शमदम
मण्डनजीवन
चण्डकिरणकुलमण्डलमुनीश्वर
मण्डलमण्डित कुण्डलीन्द्रशयन ॥ १॥

दशरर्थवरबाल राघव
दशमुखकुलकाल
कुशिकतनयरिपु
निशिचरकुलहर
शशिरविनयन श्री
पशुपतिहितकर ॥ २॥

करधृतकोदण्ड कोसल -
पुरवैकुण्ठ
घोरभवजलधितारक निजपद-
सारसचिन्मय श्रीरघुवरशुभ ॥ ३॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠

३१ सीते वसुमतिसंजाते

रागं: असावेरि

पल्लवि

सीते वसुमतिसंजाते
रमणीयगुणजाते
रक्षितसर्वभूते
परिपाहि माम्

चरणानि

श्यामे लावण्यविभवसमे
वदननिर्जितसोमे
आसदानुगतरघुरामे
परिपाहि माम् ॥ १॥

धीरे सन्मुनिहृदयागारे
करधृतकल्हारे
आघनोपमितकचभारे
परिपहि माम् ॥ २॥

धन्ये वैदेहिराजकन्ये
परिहृतभक्तदैन्ये

आसन्नुतदैवमान्ये
परिपाहि माम् ॥ ३॥

शान्ते कारुण्यपूर्णशान्ते
श्रीनिदानलोचनान्ते
कोसल पुरीरमणकान्ते
परिपाहि माम् ॥ ४॥

✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠ ✠